DREAMS OF FARAWAY PLACES
AND DARING ADVENTURES
AMERICAN

Content

- Editorial. (1)
- Editorial Board (2)
- Article
  - → The crisis of Manipur – Ipsita Gogoi (3-4)
  - → জীৱনৰ সফলতা – Chiyom Bhattacharyya (5-6)
  - → ऑपरेशन सिंदूर – Puja Paul (7-8)
  - → सत्रिया नृत्य: भक्ति और संस्कृति की अनुपम अभिव्यक्ति – Astha Baidya (9)
  - → फिल्टर वाली जिंदगी, असली बैचेनी – Sadhana Sharma (10)
- Essay
  - → Empowered Women: Empowered World. – Tanaya Missong (11-12)
- Story
  - → The Price of Being Right – Binita Bhowal (13-15)
- Biography
  - → Raja Ram Mohan Roy – Subhrojyoti Baul (16)
  - → Jadav Payeng: The forest man of India – Ipsita Gogoi (17)
  - → আম্মা ৰভাঁমহলে – Neha Paul (18-20)
  - → ড° ভূপেন হাজৰিকা – Rishi Das (21-23)
  - → मदर टेरेसा – Binita Bhowal. (24)

- Poem

→ Maa on the balcony of my heart - Pujashree Gogoi (25)

→ The reality - Doli Gogoi (26)

→ The Hallways of Somewhere - Sneha Borah (27)

→ Butterflies - Beep Gogoi (28)

→ সেউজ প্ৰথৰ অসহায় - Tanuja Kumari (29)

→ স্মৰণীয় জীৱন দশ - Mitali Chakraborty (30)

→ আইৰ সম্বোধন - Sarthak Bhattacharjee (31-32)

→ নাৰী শক্তি - Afrin Warshi (33)

→ अपने बराबर कर दो ना - Mitali chakraborty (34)

- Sketches

Editorial

Celebrating the world of words.

Welcome to the editorial page of our Commerce magazine. We are thrilled to present a platform that embraces the magic of power of language, the dynamic and ever-evolving world of commerce. Our aim is to foster a vibrant community of future business leaders, entrepreneurs, and thinkers who share a common passion for trade, finance and economic growth.

Through this magazine, we endeavor to explore the diverse dimensions of commerce, from market trends and financial insights to business strategies and global economies.

We invite you to join us on a journey of knowledge, where we will showcase insightful articles, thought-provoking essays, and real-world case studies.

Our magazine seeks to ignite curiosity, inspire innovation, and cultivate the entrepreneurial spirit. We believe in the transformative power of commerce to create opportunities, upfighting and uplifting communities, and shape a better future.

As the editorial team, we are committed to curating engaging content that reflects the voices and experiences of our COMMERCE community.

We encourage all aspiring professionals, students and visionaries to contribute their unique perspectives and ideas. Together, let's build a commerce ecosystem that connects minds, creates value, and drives sustainable prosperity

Rishi Das

Editorial Board

সৃষ্টি → Creation.

- Chief Advisor → Mr. Tapan Dutta, Head of Department
  Dr. Lonibha Deka
  Dr. J.K Tiwari, Associate Professor

- President → Rishi Das
- Vice-President → Subhrojyoti Baul
- Editor-in-Chief → Rishi Das.
- Co-editor → Puja Paul, Neha Paul.
- Drawing and Decoration of Magazine
  ↳ Binita Bhowal, Puja Paul
- Transcription and Writing Observation
  ↳ Ipsita Gogoi, Binita Bhowal, Neha Paul, Astha Baidya, Sadhana Sharma, Doli Gogoi, Janaya Missong.
- Published → Department of Commerce, Duliajan College,
  23rd April 2026.

The Crisis in Manipur

Manipur, a northeastern state of India, has been facing a prolonged period of violence and instability since 2023. What began as ethnic tensions has evolved into a serious humanitarian and political crisis, affecting thousands of lives and disrupting normal life across the state. The root of the crisis lies in tensions between two major communities:

- The meitei community, mostly living in the Imphal Valley.
- The Kuki-Zo tribal groups, residing in the sorrounding hill areas.

The conflict intensified in May 2023 after a dispute over granting Scheduled Tribe (ST) status to the Meiteis. Tribal groups opposed this move, fearing loss of land rights, job reservations, and political representation. What followed was large-scale violence, destruction of homes, and deep divisions between communities. The crisis has had devastating consequences:

- Over 260 people Killed.
- More than 60,000 displaced into reliefs camps.
- Thousands of homes and properties destroyed.

Entire communities have become segregated, with "buffer zones" separating Meitei and Kuki areas, making interaction nearly impossible.

Even now, the situation remains volatile -

▷ A bomb attack killed two children, triggering fresh violence and protests.

▷ Clashes between protesters and security forces led to additional deaths and injuries.

▷ Violence has also broken out after incidents like drug seizures and militant attacks.

▷ Leaders are now emphasizing dialogue between communities as the only solution.

These incidents show that peace remains fragile and easily disrupted.

The crisis has also affected governance, such as the state was placed under president's Rule in 2025 due to prolonged unrest, challenges still remain unresolved and key issues like justice, rehabilitation, and trust building are still pending. Hence, this conflict has deeply affected everyday life of families, they have been displaced and live in relief camps, education and economic activities have been disrupted, women and children are among the most affected. moreover, Internet shutdowns and curfews have limited communication and movement.

The situation in manipur is not just a law-and-order problem but a complex issue involving identity, land, and political rights. Hence, peace cannot be restored through force alone; It requires long term political and social solutions.

জীৱনৰ সফলতা

জীৱন এক অমূল্য উপহাৰ, কিন্তু আমি বহুবাৰ এইটো বুজিবলৈ নোৱাৰো। বহু মানুহে ভাবে যে জীৱন মানে ডাঙৰ সপোন পূৰণ কৰা, আৰ্থিক ধন উপাৰ্জন কৰা আৰু সমাজত সফল হোৱা। কিন্তু সঁচাকৈ ক'লে, এইবোৰেই জীৱনৰ সঁচা সুখ নহয়। জীৱনৰ সঁচা আনন্দ আৰু শান্তি সৰু সৰু কথাবোৰৰ মাজতেই লুকাই থাকে।

আজিৰ যুগত মানুহৰ জীৱন অতি ব্যস্ত হৈ পৰিছে। সকলোৱে অধিক পাবলৈ দৌৰি আছে- ভাল ঘৰ, বেছি টকা, উন্নত জীৱন। কিন্তু এই দৌৰত মানুহে নিজৰ মনৰ শান্তি, সময় আৰু সম্পৰ্কবোৰ হেৰুৱাই পেলায়। মানুহে বাহিৰৰ বস্তুবোৰত সুখ বিচাৰে, কিন্তু সেই সুখ সদায় স্থায়ী নহয়। ইয়াৰ বিপৰীতে, সৰল জীৱনে মানুহক ভিতৰৰ পৰা সুখী কৰি তোলে।

সৰল জীৱন মানে হৈছে নিজৰ প্ৰয়োজনবোৰ বুজি পোৱা আৰু অতিৰিক্ত আশা নকৰা। যেতিয়া মানুহে কম বস্তুত সন্তুষ্ট থাকিবলৈ শিকে, তেতিয়া তেওঁলোকৰ মনত শান্তি আহে। এটা সৰল হাঁহি, পৰিয়ালৰ সৈতে সময় কটোৱা, বন্ধুৰ সৈতে কথা- বতৰা কৰা বা প্ৰকৃতিৰ মাজত অলপ সময় বহি থকা -এই সৰু সৰু মুহূৰ্তবোৰেই জীৱনৰ সঁচা সৌন্দৰ্য। এইবোৰে মানুহক মানসিক শান্তি আৰু আনন্দ প্ৰদান কৰে।

আজি প্ৰযুক্তিয়ে আমাৰ জীৱন সহজ কৰি তুলিছে। মোবাইল, ইন্টাৰনেট আৰু ছচিয়েল মিডিয়াই আমাৰ কাম সহজ কৰিছে।

কিন্তু একে সময়তে, এইবোৰে আমাক অধিক ব্যস্ত আৰু চিন্তিতো কৰিছে। মানুহে বেছি সময় মোবাইলত কটাই আৰু নিজৰ পৰিয়াল আৰু নিজৰ সৈতে সময় কটাবলৈ পাহৰি যায়। ইয়াৰ ফলত মানুহৰ মানসিক চাপ বৃদ্ধি পায় আৰু সুখ কমি যায়। সেয়েহে, আমি সময় সময়ত এইবোৰৰ পৰা অলপ আঁতৰি থাকি নিজৰ মনক বিশ্ৰাম দিব লাগে।

সৰল জীৱনৰ আন এটা গুৰুত্বপূৰ্ণ দিশ হৈছে কৃতজ্ঞতা। যেতিয়া মানুহে নিজৰ যি আছে সেইবোৰৰ বাবে কৃতজ্ঞ হয়, তেতিয়া তেওঁলোক অধিক সুখী হয়। সদায় অধিক পাবলৈ চেষ্টা কৰাৰ পৰিবৰ্তে, যি আছে তাতেই সন্তুষ্ট থাকিবলৈ শিকাটো খুবেই দৰকাৰ। এইটোৱে জীৱনক সহজ আৰু আনন্দময় কৰি তোলে।

শেষত ক'ব পাৰি যে, জীৱনৰ সঁচা সৌন্দৰ্য সৰলতাতেই লুকাই থাকে। যদি আমি সৰলভাৱে জীৱনটো জীয়াই থাকোঁ, নিজৰ প্ৰয়োজনবোৰ বুজোঁ আৰু সৰু সৰু মুহূৰ্তবোৰৰ আনন্দ লওঁ, তেন্তে আমি সঁচাকৈয়ে সুখী হ'ব পাৰোঁ। সৰল জীৱনেই আমাক প্ৰকৃত সুখ আৰু শান্তিৰ পথ দেখুৱায়।

......

ऑपरेशन सिंदूर

आपरेशन सिंदूर एक महत्वपूर्ण सैन्य अभियान था जिसका उद्देश्य क्षेत्र मे आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ना और शांति स्थापित करना था। इस अभियान मे सैना ने अपनी ताकत और रणनीति का प्रदर्शन किया और आतंकवाद के खिलाफ एक मजबूत निशाना साधा।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैना ने अपनी बहादुरी और निष्ठा का परिचय दिया। उन्होंने आतंकवादियों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और उन्हें मार गिराया या पकड़ लिया। इस अभियान मे सैना की रणनीति और कौशल का प्रदर्शन हुआ और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई मे एक महत्वपूर्ण कदम उठाया

गया।

ऑपरेशन सिंदूर की सफलता ने क्षेत्र में शांति और स्थिरता की दिशा मे एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अभियान ने दिखाया कि सेना देश की रक्षा के लिए किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार है। ऑपरेशन सिंदूर एक गौरवशाली पल था जिसने देश के लिए बलिदान की भावना को प्रदर्शित किया।

इस अभियान से हमें यह सीखने को मिलता है कि सेना की एकता और निष्ठा देश की रक्षा के लिए कितनी महत्वपूर्ण है। ऑपरेशन सिंदूर एक प्रेरणादायक उदाहरण है जो हमें देश के लिए काम करने और बलिदान करने की प्रेरणा देता है। ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के पीछे सेना की मेहनत, रणनीति और निष्ठा का महत्वपूर्ण योगदान था।

....

सत्रिया नृत्य : भक्ति और संस्कृति की अनुपम अभिव्यक्ति

सत्रिया नृत्य भारत की प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है, जिसका उद्गम असम में हुआ। इसकी शुरुआत 15वीं शताब्दी में महान संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा की गई थी। इस नृत्य का उद्देश्य भक्ति भाव के माध्यम की महिमा का प्रसार करना था।

सत्रिया नृत्य की विशेषता इसकी सरलता, सुंदर मुद्राएँ और भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। इसमें नर्तक पारंपरिक वेशभूषा पहनकर धार्मिक कथाओं को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। पहले यह नृत्य केवल पुरुषों द्वारा मठों (सत्रों) में किया जाता था, लेकिन आज महिलाएँ भी इसमें भाग लेती हैं।

इस नृत्य में ढोल, ताल और बांसुरी जैसे वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता है, जो इसकी लय और सौंदर्य को और बढ़ाते हैं। सत्रिया नृत्य असम की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और आज इसे देश-विदेश में भी सराहा जाता है।

सत्रिया नृत्य भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर आधारित है। इसमें रामायण महाभारत और भागवत पुराण की कथाओं को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। यह नृत्य भक्ति, भाव और आध्यात्मिकता का सुन्दर मेल है।

सत्रिया नृत्य को वर्ष 2000 में भारत सरकार द्वारा शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता दी गई। आज यह नृत्य न केवल असम बल्कि पूरे देश और विदेशों में भी लोकप्रिय हो रहा है।

अंत में, सत्रिया नृत्य केवल एक कला नहीं, बल्कि असम की समृद्ध संस्कृति, परंपरा और भक्ति भावना का प्रतीक है।

••••••

फिल्टर वाली जिंदगी, असली बेचैनी

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया हमारी दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। हर कोई अपनी जिंदगी को खूबसूरत दिखाने के लिए फिल्टर, एडिटिंग और परफेक्ट पलों का सहारा लेता है। लेकिन इस "फिल्टर वाली जिंदगी" के पीछे एक ऐसी सच्चाई छिपी होती है, जिसे हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं — असली बेचैनी।

सोशल मीडिया पर दिखने वाली चमक-दमक हमें दूसरो से अपनी तुलना करने पर मजबूर कर देती है। हमे लगता है कि बाकी लोग हमसे ज्यादा खुश, सफल और परफेक्ट है।

असल में, सोशल मीडिया पर दिखने वाली जिंदगी पूरी तरह सच्ची नही होती। हर किसी के जीवन में संघर्ष और परेशानियां होती है, जो स्क्रीन के पीछे छिपी रहती है। इसलिए जरूरी है कि हम इस आभासी दुनिया को समझदारी से अपनाए और अपनी असली जिंदगी को महत्व दें।

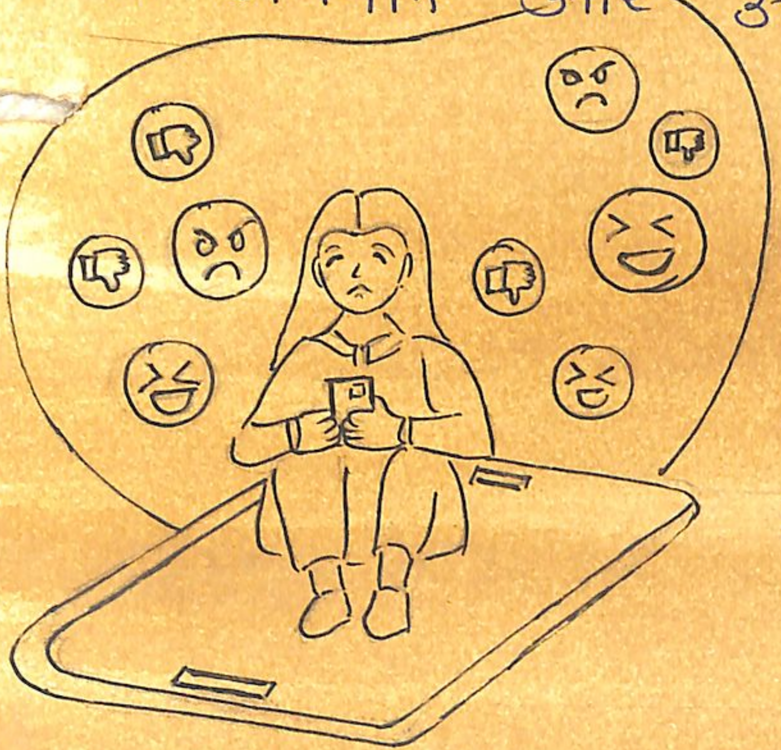

संतुलन बनाकर और खुद को स्वीकार करके ही हम इस "फिल्टर वाली जिंदगी" के बीच अपनी असली खुशी पा सकते हैं।

....

Empowered Women Empowered World

Women empowerment is no longer just an idea; it is a necessity in today's rapidly growing and changing world. As societies develop, the role of women is also evolving from traditional responsibilities to active participation in every field such as education, business, and politics, and technology.

In earlier times, women were often limited to household duties and had fewer opportunities for education and employment. However, with awareness and social progress, this situation is gradually changing. Today, women are becoming doctors, engineers, leaders, and entrepreneurs, contributing equally to the nation's growth.

Education plays a key role in empowering women. When a women is educated, she becomes independent, confident, and capable of making her own decisions. Governments and organizations have also taken important steps to support women's development. Programs like Beti Bachao Beti Padhao encourage education and protection of girls, helping build a stronger future.

Despite progress, challenges still remain. Many women continue to face issues like gender discrimination, unequal pay, and lack of safety. In some areas, traditional thinking still limits women's freedom and opportunities. True empowerment is not only about

giving rights but also about changing mindsets.

In today's world, technology and social media have also beco-me powerful tools for women. They help women express their opinions, start businesses, and connect globally. Women are now raising their voices and standing up for their rights more than ever before.

The growth of a nation depends on the empowerment of its women. When women are given equal opportunities, they contribute to economic development, social progress, and innova-tion. Empowering women leads to a more balanced and fair society.

In conclusion, women empowerment in today's world is a sign of true progress. While significant improvements have been made, continuous efforts are needed to ensure equality, respect, and opportunities of all women. A society that values and empowers its women is a society that moves forward with strength and unity.

The Price of Being Right

There were four girls- Ria, Meera, Kavya and Anika
Ria, Meera and Kavya had been close friends for years. They did everything together- shopping, travelling, trying new food, and sharing every small moment of their lives. Their bond was simple, comfortable, and built on trust.

One day, Meera introduced Anika to the group. At first, everything seemed normal. Anika was fun, bold, and confident. Slowly, she became a part of their group, and soon, all four girls were inseparable.

But slowly, things began to change. Anika had a different way of thinking. She often looked for shortcuts and pushed others to do the same. Meera and Kavya drawn by her confidence, began to follow her ideas without much thought. Ria, however, started noticing that something wasn't right.

One day, Anika came up with an Idea that sounded Clever at first. "There's an inter-school competition coming up," she said. "Why work so hard? I have access to last year's judging patterns. We can just take content from online sources and present it as our own. No one will notice."

Meera and Kavya agreed almost instantly. It felt easy and exciting.
Ria frowned. "That's not smart, it's dishonest," she said firmly. "If you win like this, it won't even be your achievement. And if you get caught, it could seriously affect your reputation." But they brushed her off.

"Everyone does it," Meera said casually. "Stop acting like a teacher," Kavya added. Anika smiled, "If you don't want to be part of it, then don't be. But don't try to stop us."

Ria refused to be involved.
On the day of submission, everything seemed fine - until one of the judges recognised parts of their work from an online source. Within minutes, their project was flagged for plagiarism.
Instead of appreciation, they faced disqualification.
The next day, instead of accepting their mistake, they turned against Ria.
"This is all because of you," Meera snapped. "If you had supported us, maybe things would have been different," Kavya added. "You always act like you're better than us," Anika said coldly.
Ria stood there, silent.
She had warned them. She had tried to help. But instead of understanding, they blamed her.
In that moment, she realized something important - no matter how much she explained, they were not willing to listen.

What hurt her most was not their mistake, but how easily years of friendship were replaced by the influence of someone new.
So, without arguing this time, she made a quiet decision.
She walked away.
Days passed. The laughter, the memories, the closeness - all faded. It wasn't easy. she felt loneliness, but she also felt a streange sense of peace.
Because sometimes, doing the right thing doesn't bring people closer.
Some times, it shows you who you need to leave behind.

Raja Ram Mohan Roy

Raja Ram Mohan Roy was a great Indian social reformer born in 1772 in Bengal. He is known as the "Father of Indian Renaissance" for bringing modern ideas to Indian society. He was well-educated and knew many languages like Sanskrit, Persian, and English.

He strongly opposed social evils like Sati and worked hard to abolish it, which was finally banned in 1829. He also supported women's rights, education, and freedom of speech. In 1828, he founded the Brahmo Samaj to promote equality and remove superstitions.

Raja Ram Mohan Roy also worked towards improving the education system by promoting Western education and scientific learning in India. He passed away on September 27, 1833, in Bristol, England. His contributions laid the foundation for modern India, and continue to inspire generations.

Jadav Payeng : The forest man of India

Jadav Payeng, Popularly known as "The Forest man of India", is an environmentalist from Assam. He was born in 1963 in the Majuli island region of Assam. His inspiring journey began in 1979 when he noticed many snakes dying due to lack of trees and shade on a barren sandbar.
Deeply affected, Jadave Payeng decided to take action. He started planting trees on the empty land, one by one, and continued doing so everyday for years. His dedication led to the creation of a large forest known as the Molai forest, which now spreads over hundreds of hectares.
Despite facing many challenges, he never gave up. His work has been recognised across India, and he was awarded the Padma Shri in 2015 for his contribution to environmental conservation.

Jadav Payeng's life teaches us the importance of protecting nature. His efforts show that one person's determination can make a huge difference in the world.

আশা ভোঁসলে

ভাৰতীয় সংগীত জগতৰ এগৰাকী কিংবদন্তি গায়িকা আছিল। তেওঁ হিন্দী চলচ্চিত্ৰৰ নেপথ্য সংগীতৰ ক্ষেত্ৰত অতুলনীয় অৱদান আগবঢ়াইছিল আৰু তেওঁৰ কণ্ঠস্বৰৰ বৈচিত্ৰ্যৰ বাবে বিখ্যাত আছিল। তেওঁৰ জীৱন আছিল সংগ্ৰাম, সাফল্য আৰু সংগীতৰ এক অসাধাৰণ যাত্ৰা। তেওঁ ১২,০০০ ৰো অধিক গান গাইছিল বিভিন্ন ভাষাত।

আশা ভোঁসলেৰ জন্ম হৈছিল ৮ ছেপ্তেম্বৰ ১৯৩৩ চনত মহাৰাষ্ট্ৰৰ চাংলি জিলাৰ গোৰাৰ নামৰ অৰু ঠাইত। তেওঁৰ প্ৰকৃত নাম আছিল আশালতা দীননাথ মংগেশকাৰ। তেওঁ এটা সংগীতময় পৰিয়ালত জন্মগ্ৰহণ কৰিছিল। তেওঁৰ দেউতাক দীননাথ মংগেশকাৰ আছিল এজন বিখ্যাত মাৰাঠি থিয়েটাৰ অভিনেতা আৰু শাস্ত্ৰীয় সংগীতজ্ঞ। মাকৰ নাম আছিল শেৱন্তী (বা শুধামতী) মংগেশকাৰ। তেওঁ এটা সংগীতময় পৰিয়ালয়ত জন্ম গ্ৰহণ কৰিছিল। তেওঁৰ

দেউতাক 'দীননাথ মাংগেশকাৰ আছিল এজন বিখ্যাত মাৰাঠি থিয়েটাৰৰ অভিনেতা আৰু শাস্ত্ৰীয় সাংগীতজ্ঞ। মাকৰ নাম আছিল 'শেবন্তী (বা শুদ্ধমতী) মাংগেশকাৰ।

তেওঁ পাঁচ ভাই-ভনীৰ মাজত তৃতীয় সন্তান আছিল। তেওঁৰ ডাঙৰ ভনী আছিল লতা মাংগেশকাৰ, আন দুজন ভনী আছিল মীনা মাংগেশকাৰ আৰু উষা মাংগেশকাৰ। সকলোৰে সাংগীতৰ সৈতে জড়িত আছিল। তেওঁৰ বয়স যেতিয়া মাত্ৰ ৯ বছৰ আছিল, তেতিয়া দেউতাকৰ মৃত্যু হয়। পৰিয়ালটোৰ আৰ্থিক অৱস্থা বেয়া হোৱাত তেওঁলোক পুনেৰ পৰা কোলহাপুৰ আৰু পিছত মুম্বাইলৈ স্থানান্তৰিত হয়। পৰিয়ালৰ ভৰণ-পোষণৰ বাবে আশা আৰু লতাই সৰু বয়সতে সাংগীত আৰু চলচ্চিত্ৰৰ কাম আৰম্ভ কৰে। দীননাথে তেওঁলোকক শাস্ত্ৰীয় সাংগীতৰ প্ৰশিক্ষণ দিছিল।

আশাৰ সাংগীত যাত্ৰা আৰম্ভ হৈছিল ১৯৪৩ চনত। তেওঁৰ প্ৰথম গান আছিল মাৰাঠি চলচ্চিত্ৰ 'মাঝা বালত চলা চলা নৱ বালা'। হিন্দীত প্ৰথম গান আছিল 'চুনাৰিয়া' (১৯৪৮) চলচ্চিত্ৰত "সাৱন আয়া'। প্ৰথম একক হিন্দী গান আছিল 'ৰাত কী ৰানী' (১৯৪৯)ত।

প্ৰাৰম্ভিক কালত তেওঁক লতাৰ ছাঁত থাকিব লগা হৈছিল, কিন্তু তেওঁ নিজৰ স্বকীয় শৈলী গঢ় তুলিছিল। তেওঁৰ কণ্ঠ আছিল জীৱন্ত, উচ্চ শক্তিশালী আৰু বৈচিত্ৰ্যপূৰ্ণ-

নাচৰ গান, ৰোমান্টিক, গজল, ভজন, লোকসংগীত, কাৱালী আদি সকলোতে সফল।

তেঁও ১৮টা ভাষাত গান গাইছিল- হিন্দী, বাংলা, অসমীয়া, মাৰাঠী, গুজৰাটী, তামিল, তেলেগু আদি। তেঁও একক এলবাম, কনচাৰ্ট আৰু বিদেশী মঞ্চতো প্ৰদৰ্শন কৰিছিল। তেঁও ১০০০ৰো অধিক চলচ্চিত্ৰত গান গাইছিল। তেঁওক "ইণ্ডিপপৰ ৰাণী' বুলি কোৱা হয়।

আশা ভোঁসলে সক্ৰিয়ভাৱে সংগীতৰ সৈতে জড়িত আছিল। তেঁও 2026 চনৰ মাৰ্চ মাহতো ৰাজহুৱা অনুষ্ঠানত দেখা দিছিল। 2026 চনৰ ১২ এপ্ৰিল ত ৯2 বছৰ বয়সত মুম্বাইৰ ব্ৰীচ কেণ্ডী হাস্পতালত বহু অংগ বিকল হোৱাৰ বাবে তেঁওৰ মৃত্যু হয়। তেঁওক ৰাজ্যিক সন্মানেৰে অন্ত্যেষ্টিক্ৰিয়া কৰা হয়।

তেঁওৰ মৃত্যুত সমগ্ৰ ভাৰতবৰ্ষত শোকৰ ছাঁয়া পৰে। তেঁওৰ কণ্ঠই লাখ লাখ হৃদয়ত চিৰকালৰ বাবে বাজি থাকিব।

আশা ভোঁসলেৰ জীৱন এটা প্ৰেৰণা -সংগ্ৰামৰ পৰা সাফল্যলৈকে। তেঁও কেৱল গায়িকা নাছিল, তেঁও আছিল সংগীতৰ এক অবিস্মৰণীয় অধ্যায়।

ড° ভূপেন হাজৰিকা

ড° ভূপেন হাজৰিকা অসমৰ এজন মহান গায়ক, কবি, গীতিকাৰ, সংগীতকাৰ আৰু চলচ্চিত্ৰ নিৰ্মাতা আছিল। ৮ ছেপ্টেম্বৰ ১৯২৬ চনত অসমৰ সদিয়াত ভূপেন হাজৰিকাৰ জন্ম হৈছিল। তেওঁক সন্মানৰ সৈতে "ব্ৰহ্মপুত্ৰৰ কবি" বুলি কোৱা হয়। তেওঁ নিজৰ সংগীতৰ জৰিয়তে সমাজৰ বিভিন্ন সমস্যা, মানুহৰ দুখ-কষ্ট আৰু মানৱতাৰ বাৰ্তা বিশ্বজুৰি প্ৰচাৰ কৰিছিল।

ভূপেন হাজৰিকাৰ পিতৃৰ নাম নীলকান্ত হাজৰিকা আৰু মাতৃৰ নাম শান্তিপ্ৰিয়া হাজৰিকা। সৰু বয়সৰ পৰাই তেওঁ সংগীতৰ প্ৰতি গভীৰ আগ্ৰহ দেখুৱাইছিল। তেওঁৰ মাতৃৰ পৰা

তেওঁ সংগীতৰ প্ৰাথমিক শিক্ষা লাভ কৰিছিল। সৰুতেই তেওঁ নিজৰ প্ৰথম গান লিখি গাইছিল, যাৰ পৰা তেওঁৰ অসাধাৰণ প্ৰতিভা প্ৰকাশ পাইছিল।

তেওঁ শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰতো অতি আগবঢ়া আছিল। তেওঁ কটন কলেজত পঢ়াশুনা কৰিছিল আৰু পিছত বেনাৰস হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়ৰ পৰা উচ্চ শিক্ষা লাভ কৰিছিল। তাৰ পিছত তেওঁ আমেৰিকাৰ কলাম্বিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ত পিএইচডি ডিগ্ৰী লাভ কৰে। বিদেশত পঢ়াশুনা কৰাৰ সময়ত তেওঁ বিশ্বসংস্কৃতিৰ সৈতে পৰিচিত হৈছিল আৰু ইয়াৰ প্ৰভাৱ তেওঁৰ সংগীত আৰু চিন্তাত দেখা গৈছিল।

ভূপেন হাজৰিকাৰ সংগীত জীৱন অতি সমৃদ্ধ আছিল। তেওঁ অসমীয়া, হিন্দী আৰু বঙালী ভাষাত বহু গীত গাইছিল। তেওঁৰ গানসমূহত সমাজৰ বাস্তৱ চিত্ৰ প্ৰতিফলিত হৈছিল। তেওঁ দৰিদ্ৰতা, অন্যায়, বৈষম্য আৰু মানৱতাৰ বিষয়ত গান লিখিছিল। তেওঁৰ কণ্ঠৰ শক্তি আৰু অনুভৱৰ গভীৰতাই মানুহৰ মন জয় কৰিছিল। তেওঁৰ বিখ্যাত গানসমূহে মানুহক একতাৰ বাৰ্তা দিয়ে আৰু সমাজত সজাগতা সৃষ্টি কৰে।

ভূপেন হাজৰিকা কেৱল এজন শিল্পী নহয়, তেওঁ আছিল এজন সমাজসেৱকো। তেওঁ সদায় মানুহৰ কল্যাণৰ বাবে কাম কৰিছিল আৰু নিজৰ গানৰ জৰিয়তে মানুহক একতাৰ পথ দেখুৱাইছিল।

তেওঁৰ অসাধাৰণ অৱদানৰ বাবে তেওঁ বহু সন্মান লাভ কৰিছিল। তেওঁ পদ্মশ্ৰী, পদ্মভূষণ আৰু দাদাচাহেব ফাল্কে বঁটা লাভ কৰিছিল। মৃত্যুৰ পিছত তেওঁ ভাৰতৰ সৰ্বোচ্চ অসামৰিক সন্মান "ভাৰত ৰত্ন" লাভ কৰে। এইবোৰ সন্মানে তেওঁৰ জীৱনৰ মহান কামৰ স্বীকৃতি দিয়ে।

২০১১ চনৰ ৫ নৱেম্বৰত তেওঁৰ মৃত্যু হয়। যদিও তেওঁ আমাৰ মাজত নাই, তেওঁৰ গান আৰু আদৰ্শ সদায় জীয়াই থাকিব। তেওঁৰ সংগীতে আজিও মানুহক অনুপ্ৰাণিত কৰে আৰু সমাজত ভাল চিন্তা সঞ্চাৰ কৰে।

শেষত কব পাৰি যে ভূপেন হাজৰিকা অসমৰ গৌৰৱ আৰু ভাৰতৰ এক অমূল্য সম্পদ। তেওঁৰ জীৱন আৰু কৰ্মই আমাক শিকায় যে সংগীত কেৱল মনোৰঞ্জনৰ বাবে নহয়, ই সমাজ পৰিৱৰ্তনৰ এক শক্তিশালী মাধ্যম। তেওঁৰ স্মৃতি সদায় আমাৰ হৃদয়ত অমলিন হৈ থাকিব।

मदर टेरेसा

बचपन में उनके माता पिता उन्हे 'गोन्झा' कहकर पुकारते थे, जिसका अर्थ अल्बानी भाषा में 'पुष्पकली' होता है। बचपन से ही सेवा की भावना उनमें विद्यमान थी। शांति की दुत मादार टेरेसा का वास्तविक नाम एग्नेस गोन्झा बोनाशिन था उनका जन्म 1910 सन मे 29 अगस्त को युगोस्लाविया के छोटे शहर स्कोपजे में एक अल्बानियन दम्पति के घर हुआ था। नवम्बर 1928 ई को 18 वर्ष की उम्र में वह कोलकाता पहुँची। फिर वो दार्जिलिंग गई। जहाँ सिस्टारमरफी के मार्गदर्शन मे उन्होने 'नन' की ट्रेनिंग लेनी शुरू की। मदर टेरेसा 1948 मे भारत की नागरिक बन गई। 1966 तक 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' के द्वारा कलकत्ता में 8000 तथा पूरे देश में 22000 कुष्ठ रोगियों का इलाज किया जा रहा है। दीन दुखियों, अनाथो, बेसहारो आदि की 'अनवरत सेवा' तथा 'अथक प्ररिश्रम' का असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ा। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा और वह हृदय की बीमारी से ग्रसित हो गई। 5 सितम्बर, 1997 को काल के क्रुर हाथ ने उन्हे हम से छीन लिया। उनके पार्थिव शरीर का अन्त हो गया। लेकिन उनके द्वारा किया हुआ कार्य हमेशा अमर रहेगा।

Maa on the balcony of my Heart

Maa,
these days are not easy.
I cry a lot,
and everytime I feel low,
I miss you more.

You were never well,
Yet you did everything for me-
Cooked, cared,
and smiled through your pain.

I still remember coming home from tution,
Seeing you in the baranda,
waiting for me.
That moment still lives in my heart.

No one understands me like
you did, Maa.
No one ever will.

I miss you everyday, and
I know somewhere above,
you still wait for me
with the same love.

The Reality

You know me,
I know you,
In this world,
No secrets,
No lies,
Can ever be hidden.

I am not perfect,
So ain't you!
Nobody ever became perfect,
Nor can anybody be.

You don't always get what you want,
Nor can anybody else,
It only happens in movies,
Where Thanos gets all the Infinity stones,
And destroys half the population.

We are a part of everything,
Believe or not, everything is related,
Whether related or not,
We are all connected,
Whether in this life,
Or in our past lives.

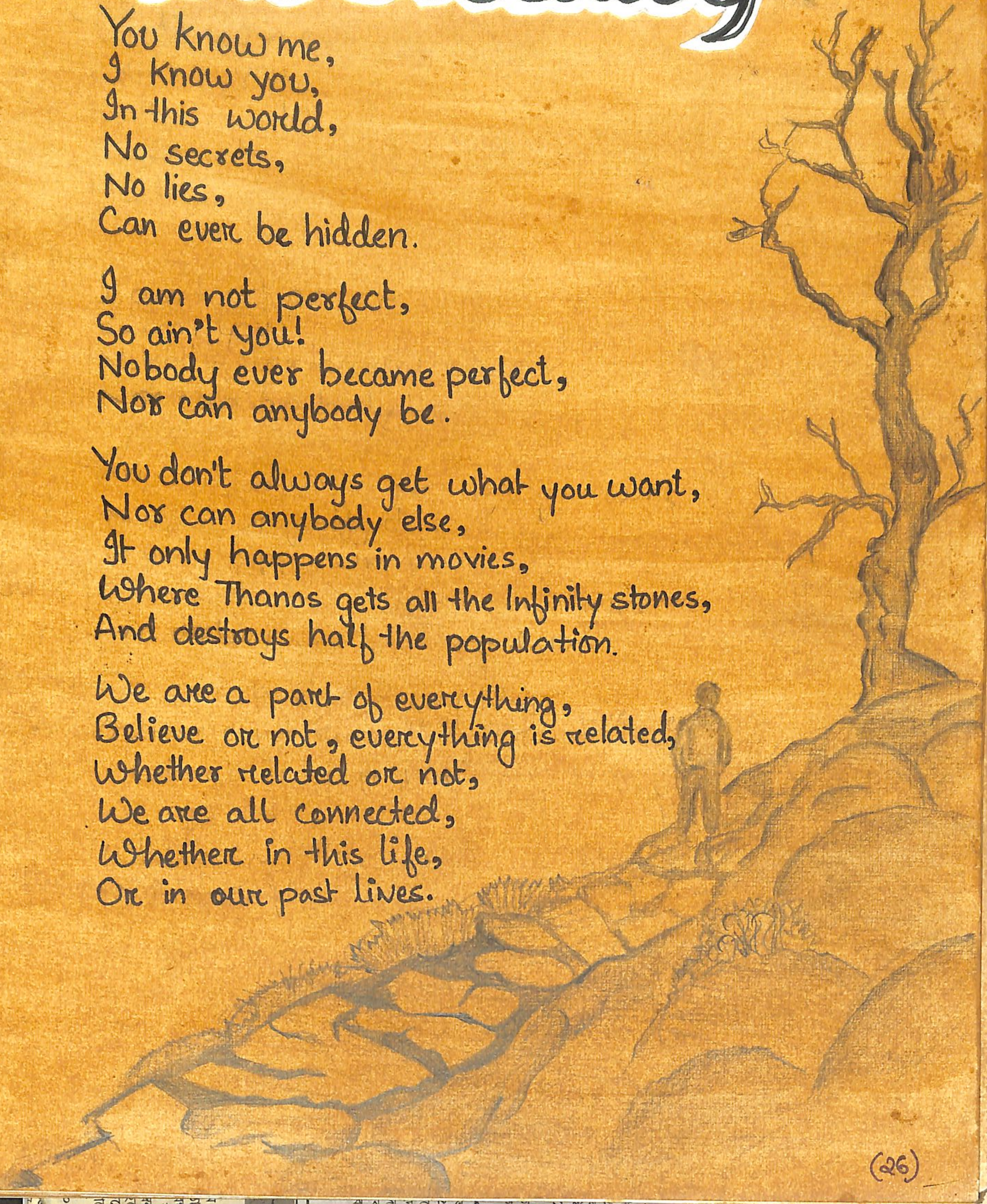

The Hallways Of Somewhere

We walked through hallways;
like we knew where we were going.

Interacting with different shades of the same folks....
all saying "I'm fine,"
though none of us were certain.

Where papers and competition
slowly turned friendship into rivalry.
From walking home with laughter
to walk aimlessly with thoughts.

As if our footsteps were borrowed
from someone else's expectations.
And somewhere
between the past and the future;

We forgot
how to live in the present.

Butterflies

Oh beautiful butterfly
You are the most colourful insect
Seen flying through
Your wings flap in the air
Your colours spread everywhere
Oh! beautiful butterfly
You touch my heart
And remove all my fear
Some people catch you
Some children tear you

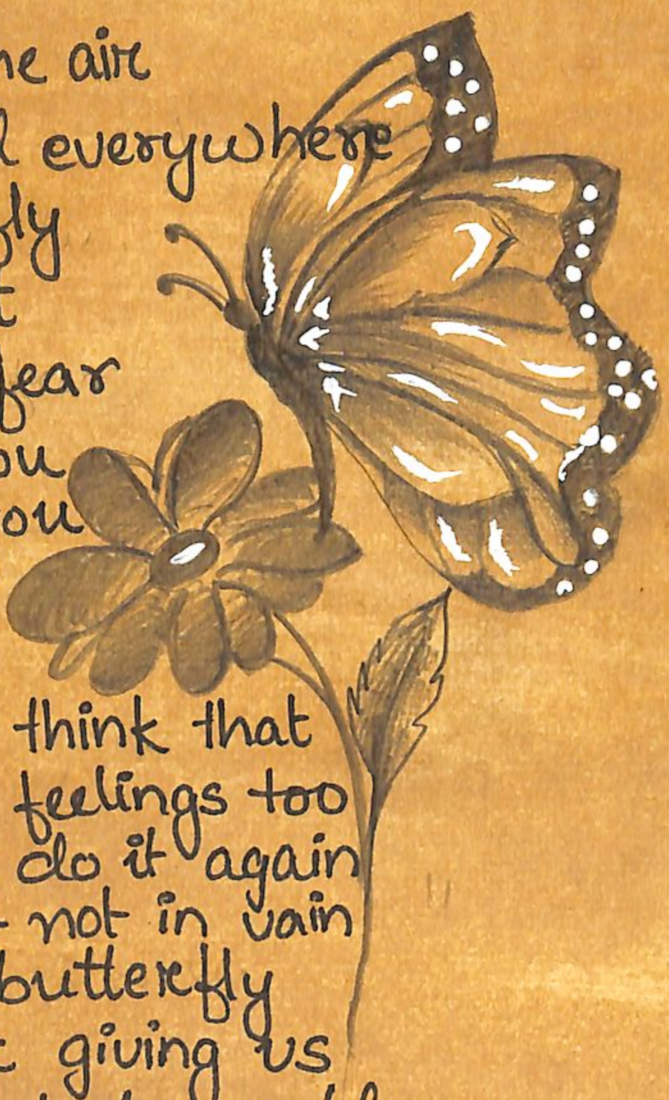

To hardly ever think that
You have your feelings too
We will never do it again
We promise but not in vain
Oh beautiful butterfly
Thank you for giving us
Such a colourful world
And always teaching us
To be joyful and happy.
And make our life worth.

সেউজ পথৰ আহ্বান

লাভেই কেৱল জীৱনৰ লক্ষ্য নহয়,
প্ৰকৃতি বিনা উন্নতিৰ অৰ্থো নাথাকয়।
বন যদি গঢ়ে ধোঁৱা আৰু বিষ,
সেই উন্নতিত লুকাই থাকে ধ্বংসৰ দিশ।
বজাৰৰ কোলাহল, উদ্যোগৰ গতি,
মাটি আৰু গছেই জীৱনৰ শান্তি।
নদী যদি শুকায়, আকাশ যদি কাল,
তেন্তে কত থাকিব আগন্তুকৰ কাল?
সেউজ চিন্তাৰে গঢ়োঁ নতুন দিশ,
দায়িত্বশীল ব্যৱসায় হওক আমাৰ নিশান।
সূৰ্যৰ পোহৰ, বতাহৰ শক্তি,
প্ৰকৃতিৰ লগত মিলাই উন্নতি।
পুনঃ ব্যৱহাৰ, পুনৰ চিন্তা, পুনৰ সৃষ্টি,
সেউজ অৰ্থনীতিত আছে ভৱিষ্যতৰ দৃঢ় ভিত্তি।
লাভ আৰু দায়িত্ব যেতিয়া হয় এক,
তেন্তে সমাজ পায় উন্নতিৰ পথেক।
আজিৰে সিদ্ধান্ত আগন্তুকৰ আশ,
সেউজ ব্যৱসায়েই ভৱিষ্যতৰ শ্বাস।
প্ৰকৃতি ৰক্ষা কৰি আগবাঢ়ো আহা,
সৃষ্টিৰ উন্নতিতেই সঁচা সাফল্য পোৱা।

স্মৰণীয় জুবিন দা

তুমি নাই আমাৰ মাজত সপোন যেন লাগিছে
গোটেই অসমত এতিয়া খালি খালি অনুভৱ হৈছে
আজি গোটেই অসমত তোমাক দেখিবলৈহে হেঁপাহ
বুকুৰ মাজত কান্দোন লৈ দেখিছে হেই শেষ দেখা ।।

ৰৈ ৰৈ বিনালে সঁচাকে নিকি তোমাৰ শেষ চিনেমা
সকলোৱে জানে সাহসী নাৰী হয় আমাৰ বৌ গৰিমা
তোমাৰ দিয়া সকলো দান আমাৰ বাবে শ্ৰেষ্ঠ দান
তোমাৰ কৰা সকলো কাম আমি কৰোঁ সন্মান ।।

আশা কৰোঁ যতেই আছা, ভালকৈ থাকিবা
অসম বাসীৰ মনত তুমি ঈশ্বৰ হৈ বাঁচিবা ।।

আইৰ সপোন

যেতিয়ালৈ কেঁচুৱাহৈ
থাকিবি বলহীন
আইৰ বুকুতে হাহিমাতি
ৰ'চোন কিছুদিন।

অলপ শ্ৰমে যাও ভাগৰি
আজেৰিকাহে বেমাৰো হয়
তই বোপাটো মোৰ সোনাটো
দেহাত তেনেই ক্ষীণ
আইৰ কোলাতে আচল ধৰি
ৰ'চোন কিছুদিন।

হাঁহিখুৰি দিবি কিৰিলি মাৰিবি
খোজে প্ৰতি উজুটি খাবি
এখোজ দুখোজ আগবাঢ়িবি
মোৰেই আঁচল ধৰি।

পুষ্ট হবি বলো হব
হাঁহিমাতৰ কলতানে
পূৰ্ণ কৰি ভৰে ৰাতিদিন
আইৰ বুকুখনত নিভয়ৰ্তে
ৰ'চোন আৰু কিছুদিন।

যেতিয়া তই ডেকাহবি
তেজাল দেহা উচ্ছ্বাসিত প্ৰান
যৌৱনেৰেই অগনি দাহে
কৰি অগ্নিস্নান

তেতিয়া তোৰ শক্তি হ'ব
বুকু ভৰা সাহ।
দেশ মাতৃকাক বচাবলি
কুম্ভ কাণ্ঠ মাতি কৰি
আহ, আহ জনতা আহ
ওলাই ওলাই আহ।

দুষ্টকৈ তই কৰিবি দমন
নিকা সমাজ গঢ়ি
মানবতাৰ মূল্যবোধৰ
বিজয় কেতন
লৌহ কণ্ঠৰ বজ্ৰমুষ্ঠিত ধৰি।

উচ্চনীচৰ ভেদাভেদৰ
ধৰ্মান্ধতা হিংসাদ্বেষৰ
বিচ্ছিন্নতা বৰ্বৰতা ধ্বংস বীজৰ
কৰি অৱসান
সত্য পথত আগুৱাই যাবি
সত্যব্ৰতত উচ্ছৃত প্ৰাণ।

নাৰী শক্তি

আমি সকলোৰে এগৰাকী নাৰী
আমিয়ে কৰিব লাগিব শোষিত, নিষ্পেষিত নাৰীসকলক মুক্তি
তাৰ বাবে ল'ব লাগিব আমি নিত্য নৱ কাৰ্যসূচী
কৰিবই লাগিব নিৰ্যাতিত নাৰীৰ মুক্তি ।
নিৰক্ষৰক কৰিব লাগিব স্বাক্ষৰ
তেহে হ'ব জীৱন ধন্য আমাৰ
কথা-বতৰা, আচাৰ-ব্যৱহাৰ আৰু সাজপাৰ
হ'ব লাগিব চিৰ উন্নত
সহায় কৰিব লাগিব নাৰীক
আত্ম নিৰ্ভৰ হোৱাত
কৰিব লাগিব সমাধান নাৰীৰ সমস্যা
হ'ব যে ই আমাৰ নাৰীৰ যশস্যা
জাতি-ধৰ্ম নিৰ্বিশেষে
গঢ়ি তুলিব লাগিব আত্মীয়তা
সকলোৱে পাব তেহে
সমান স্বাধীনতা
কৰিব লাগিব সকলোৱে
সৰল জীৱন-যাপন
দিব লাগিব সকলোকে
জোৰ আৰু সৃষ্টিৰ সন্ধান ।
আনিব লাগিব আমি
দেশৰ পৰিৱৰ্তন
তাৰ বাবে হ'ব লাগিব সকলোৱে
অধিক সচেতন ।

अपने बराबर कर दो ना

तुमने कहा था हम एक ही हैं तो अपने बराबर कर दो ना
नैपी जब मैं बदलती हूं तो दूध की बोतल भर दो ना
बस यूँ ही एक है एक है करके कहा ज़िंदगी चलती है
कभी तुम भी सर दबा दो मेरा ये भी कमियां खलती है
जब मैं भी आफ़िस जाती हूँ तुम भी घर को संवार दो ना
तुमने कहा था हम एक ही हैं तो अपने बराबर कर दो ना
मत करो वादे जन्मों के इस पल खुशी की वजह दो ना
आओ पास बैठो कुछ बातें करें कभी दिल के ज़ख्म भी भर दो ना
क्यूँ कहना भी पड़ता है ये तुम एहसासो को समझो ना
तुमने कहा था हम एक ही हैं तो अपने बराबर कर दो ना
तुम क्रिकेट भी अपनी देखो और मैं सीरियल अपना लगाऊँगी
थोड़ा हाथ बटा देना मैं जब किचन में जाऊँगी
सब मिलकर साथ करने की हम में ये भी तो क्वालिटी है
हम साथ खड़े हैं एक दूजे के हल ही जेंडर इक्वालिटी है
तुम भी नए से हो जाओ अब और नयी सी मुझे उमर दो ना
तुमने कहा था हम एक ही हैं बस यूँ ही जीवन बसर हो ना

Sadhana Sharma
B.Com 6th Sem

By Binita Bhowal
B.Com 6th Sem

By:- Binita Bhowal
Bcom 6th sem

Search...
COMMERCE DEPARTMENT
DULIAJAN
COLLEGE
বাণিজ্য বিভাগ